p>

Title: Need to formulate a special action plan for irrigational facilities in drought affected areas in Bihar and other parts of the country.

श्री कौशलेन्द्र कुमार (नालंदा): सभापति जी, देश के अधिकांश भागों में सूखे की मार झेल रहे किसानों के सामने सिंचाई की गंभीर समस्या उत्पन्न होन से किसानों की कमर टूट गई है। देश की पैदावार पर बुरा प्रभाव पड़ा है। किसानों में निराशा और कुंठा व्याप्त हो गई है। किसानों का जीवन और खेती-बाड़ी अस्त-व्यस्त हो गई है। धान और गेहूं की खेती करने वाले किसानों की स्थिति बहुत ही भयावह हो गई है। वर्षा कम होने से धान और सिंचाई का साधन न होने से एवं सिंचाई की दुर्व्यवस्थाओं के चलते गेहूं की खेती की बुआई भी बुरी तरह प्रभावित हुई है। सूखाग्रस्त राज्यों में बिहारों के किसानों की हालत और भी दयनीय हो गई है। संसाधन रहते हुए भी बिजली की उपलब्धता नहीं होने से तथा पूरी क्षमता से नहर नहीं चलाए जाने से तथा राज्य के नलकूपों और निजी नलकूपों की सुविधा को समय से उपलब्ध नहीं कराए जाने से बिहार के किसान सूखे की दोहरी मार झेल रहे हैं।

महोदय, दक्षिणी बिहार सबसे उपजाऊ धान और गेहूं का कटोरा कहा जाने वाला नालंदा, औरंगाबाद, सासाराम और भोजपुर की स्थिति बहुत ही खराब हो गई है। हजारों-हजार हेक्टेयर जमीनें परती हो गई हैं, जबकि इन जिलों में नहरों का जाल, कई दर्जन बांध, दो बड़ी लिफ्ट कनाल तथा छोटी-छोटी दो-तीन लिफ्ट कनाल भी मौजूद हैं। गंगा, कर्मनाशा, पुनपुन, सोन, पनचान और फलगू आदि नदियों में प्रचुर मात्रा में पानी रहने के बावजूद, पूरी क्षमता से लिफ्ट कनालों को, यांत्रिक दोषों और बिजली आपूर्ति कम होने से नहीं चलाया गया। बांधों की जर्जर स्थिति होने से वर्षा का पानी भी नदियों में बह जाता है। किसानों को खेत तक पानी नहीं पहुंचाया जाता है।

महोदय, मैं इस लोक महत्व के अविलम्बनीय विषय को सदन के संज्ञान में लाते हुए सरकार से मांग करता हूं कि सूखाग्रस्त क्षेत्रों की सिंचाई हेतु एक विशेष कार्य-योजना बनाई जाए। उन क्षेत्रों में पहले से मौजूद सिंचाई संसाधनों का पूरा उपयोग करने हेतु एक विशेष कार्य-योजना बनाई जाए। उन क्षेत्रों में पहले से मौजूद संसाधनों का पूरा उपयोग करने हेतु, उपयोग लायक बनाकर किसानों की भरपूर सहायदता की जाए। यही बात कह कर मैं अपनी बात समाप्त करता हूं। धन्यवाद।